दादा भगवान परिवार का

अक्टूबर-२०२२

शुल्क प्रति नकल ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

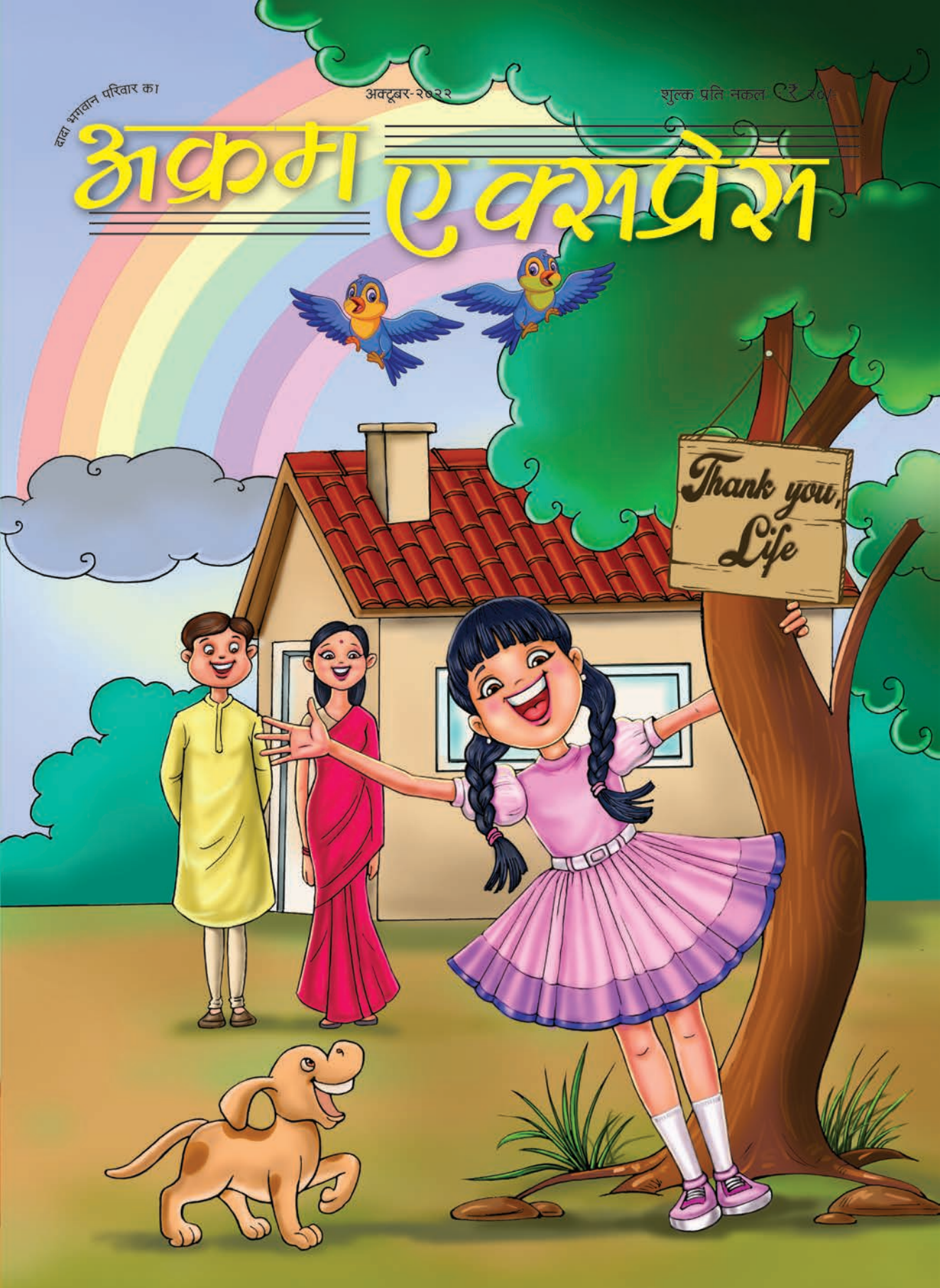

Thank You, Life

संपादकीय

बाल मित्रों,

"हलो, तुम घर पर हो? मैं तुमसे मिलने आ रहा हूँ", ना जाने कितनी बार फ्रेन्ड को फोन पर ऐसा कहकर हम उनसे मिलने पहुँच जाते थे। लेकिन २०२० में जब पहली बार पूरे विश्व में लॉकडाउन लगा था तब इतना आसान काम करना भी असंभव हो गया था। कितनी ही चीज़ें लॉकडाउन के दौरान असंभव हो गई थीं जैसे कि फ्रेन्ड्स के साथ एक क्लास में बैठकर पढ़ना, रेस्टोरेन्ट में खाना खाने जाना, मम्मी-पापा के साथ बाहर घूमने जाना इत्यादि। इन छोटी-छोटी बातों में भी कितनी खुशी समाई हुई है। है ना? उस खुशी की सही कीमत तब समझ में आई जब वह मिलना बंद हो गई। लेकिन अब जब हमें वे छोटी-छोटी खुशियाँ फिर से मिलने लगी हैं तो क्या हम उनके लिए थैंकफुल हैं?

हमारे पास ऐसी अनमोल चीज़ें हैं, जिनकी कीमत यदि हम समझ जाएँ तो हमारी खुशी कभी कम नहीं होगी। चलो, इस अंक में ऐसी समझ प्राप्त करें जिससे जो हमारे पास नहीं है उसके लिए कभी कोई शिकायत ना रहे और जो हमारे पास है उसके लिए हमेशा थैंकफुल रहें और खुश रहें।

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : १० अंक: ७
अखंड क्रमांक: ११५
अक्टूबर - २०२२

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

दादाजी कहते हैं...

वीतराग भगवान की दृष्टि क्या देखती है? वह देखती है कि मेरे पास क्या है। क्या नहीं है वह नहीं देखती। एक आदमी कहता है, 'साहब, मेरा एक हाथ कट गया।' तो कहते हैं, 'अरे, लेकिन दूसरा हाथ तो है ना।' तब वह कहता है, 'लेकिन एक तो कट गया ना!' तो कहते हैं, 'नहीं, दूसरा हाथ है, दो पैर हैं। तुम तो बहुत सुखी हो।' तो वह खुश होकर वापस चला जाता है। फिर दूसरा हाथ भी कट जाता है, तब कहता है, 'साहब, दोनों हाथ कट गए।' तो कहते हैं, 'दो पैर तो हैं ना? दो पैर हैं, दो आँखें हैं।' आँखें चली जाएँ तो कहते हैं, 'कान हैं, जीभ है।' वीतराग भगवान का ज्ञान कैसा है? वह हानि को महत्व ही नहीं देता। मेरे पास अब क्या बचा? मेरे पास क्या बचा रहा वह देखता है।

इस संसार में आपको दुःख है ही कहाँ? दुःख तो अस्पताल में है, जहाँ पैर को ऊँचा उठाकर बाँधकर रखा है! भयंकर जले हुए हैं, उन्हें दुःख है। जाकर उन्हें देख आओ तो आपको पता चलेगा कि आपको दुःख नहीं है। कुदरत के लिए खुद को खुशी होगी कि ओहोहो! कुदरत ने मुझे कितनी अच्छी 'प्लेस' दी है। (कि मुझे ऐसे कोई दुख नहीं हैं। मैं सचमुच में सुखी हूँ।)

अगर मैं न्यायाधीश होता तो...

1.

अगर मैं न्यायाधीश होता तो सभी को सुखी करके सजा देता। किसी को उसके गुनाह की छः महीने की सजा देनी हो तो पहले मैं उससे कहता कि पाँच साल से कम की सजा नहीं हो सकती।

2.

फिर वकील कम करने को कहे तो ४ वर्ष, फिर ३ वर्ष, २ वर्ष, ऐसा करते करते अंत में छः महीने की सजा करता।

3.

ऐसा करने से उसे जेल की सजा तो होगी पर मन में खुश होगा कि सिर्फ छः महीने में ही निपटारा हो गया।

4.

मित्रों, यदि गुनहगार को पहले से ही यह कहा गया होता कि उसे छः महीने की सजा होगी तो उसे वह बहुत अधिक लगती। करेक्ट? लेकिन, पाँच वर्ष की सजा हो सकती थी पर उसके बदले छः महीने की ही हुई, ऐसा कम्पैरिज़न करके वह खुश हो जाता है।

तो चलो, जब कोई मुसीबत आए तो ऐसी समझ फिट करके ख़ुश रहें कि 'यह मुसीबत तो बहुत छोटी है, शायद इससे भी बड़ी मुसीबत आ सकती है।' और इस तरह, हमारे पास जो है उसके लिए हमेशा थैंकफुल रहें।

AALOO CHILLY

यह तो

यदि जीवन में फरियाद ना हो तो इंसान सुखी हो जाए। वास्तव में वह सुखी होने के लिए फरियाद करता है और फिर वही फरियाद उसके दुःख का कारण बनती है।

सिर्फ मेरे पास ही गियर वाली साइकल नहीं है। बाकी सभी के पास है।
गियर वाली साइकल नहीं हो तो भी चलेगा। इससे अपने पैर स्ट्रोंग होते हैं।
ये जो दुःख हैं वे सब गलत समझ के कारण हैं। यदि सही समझ फिट करें तो दुःख जैसा कुछ है ही नहीं।

नई ही बात है!

यह लो एक करोड़ रुपये, मुझे तुम्हारी आँख दे दो।
ये आँखें कितनी अद्‌भुत चीज़ हैं! लाख रुपये देने पर ऐसी आँखें मिलेगी? नहीं मिलेगी। सिर्फ इन आँखों की कीमत भी अगर समझ में आ जाए तो भी हम सुखी हो जाएँगे।
नहीं... नहीं... नहीं...

Thank You, लाइफ़!

चिट्ठी हाथ में लेकर एंड्रिया पलंग पर बैठ गई। उसने धीरे से चिट्ठी खोली। एक बार पढ़ने पर उसे विश्वास नहीं हुआ। उसने वह चिट्ठी दो-तीन बार पढ़ी। फिर फटाफट अपने घर की सीढ़ियाँ उतरकर एक छोटे से घर की तरफ दौड़ी।

"सिया!! जल्दी दरवाज़ा खोलो। मुझे मिल गया, मुझे मिल गया..."

"क्या मिल गया? थोड़ी साँस तो ले लो!" घर का दरवाज़ा खोलकर सिया ने एंड्रिया को थोड़ा शांत किया।

"न्यूयॉर्क की डान्स अकैडमी में ऐडमिशन मिल गया!" एंड्रिया खुशी से फुली नहीं समा रही थी।

"क्या बात कर रही हो!" सिया इससे ज्यादा कुछ नहीं बोल पाई। न्यूयॉर्क की अकैडमी में ऐडमिशन का सपना तो सिया ने भी देखा था।

"क्या तुम्हें भी...?" एंड्रिया ने उत्साह से पूछा। तभी उसकी नज़र सिया के टेबल पर रखे फॉर्म पर गई। "अरे, तुमने तो फार्म ही नहीं भरा। क्यों?"

"समीरा दी के बिना इतनी दूर जाने का मन ही नहीं हुआ..." सिया ने बहाना बनाया।

"ओह! लेकिन मेरा ऐडमिशन हम सेलिब्रेट करेंगे। कल मेरे घर पर पार्टी है। तुम और समीरा दी जरूर से आना", कहकर एंड्रिया अपने घर की तरफ दौड़ी और सिया अपने रूम की तरफ मुड़ी। दीवार पर लगे हुए फोटो की तरफ देखकर बोली, "क्यों मम्मी-पापा? क्यों? क्यों किसी को सब कुछ मिलता है और किसी को कुछ भी नहीं?! बचपन में हमने आपको खो दिया और आज मैंने अपने सबसे बड़े सपने को भी खो दिया। अब तो मेरे पास खोने के लिए भी कुछ नहीं बचा। क्या मुझे हमेशा इसी तरह दुःखी रहना पड़ेगा?"

तभी उसे अपने कंधे पर एक प्रेम भरे स्पर्श का अनुभव हुआ।

"यह सच नहीं है, माइ डियर! भले ही हमने बहुत कुछ खोया है, लेकिन हमारे पास अभी भी कितनी सारी कीमती चीज़ें हैं। उसके लिए थैंकफुल रहेंगे तो दुःख तो कहीं गायब हो जाएगा। देखो हमारे पास रहने के लिए घर है, फिर..."

सिया ने समीरा दी की बात बीच में ही काट दी, "लेकिन यह सब काफी नहीं है, दी... काफी नहीं है... यदि में एंड्रिया होती तो जरूर जीवन को थैंक यू कहती..."

दूसरे दिन एंड्रिया के आलिशान फ्लैट में पार्टी का माहौल था। सुंदर सफेद फ्राक में एंड्रिया परी जैसी लग रही थी।

"गॉड ब्लेस यू एंड्रिया, कॉन्ग्रेच्युलेशन्स..." समीरा दी ने एंड्रिया को बधाई दी।

"थैंक्स दी..." कहकर एंड्रिया उनके गले लग गई।

"एंड्रिया, मैं आज तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ", समीरा ने प्रेम से एंड्रिया के गाल पर हाथ रखकर कहा, "यह तुम्हारी उन्नति की शुरुआत है। अभी तो तुम्हें बहुत आगे बढ़ना है। लेकिन लाइफ में अगर हमेशा खुश रहना हो तो थैंकफुल रहना मत भूलना। लाइफ में कभी अच्छे दिन आएँगे तो कभी बहुत ही कठिन। यदि हार्ड टाइम में भी तुम थैंकफुल रहने का तरीका ढूँढ लोगी तो लाइफ इज़ी हो जाएगी।"

एंड्रिया को समीरा दी की बात समझ में नहीं आई। उसे लगा, "इसमें थैंकफुल रहने की क्या बात है? मुझे जो कुछ भी मिल रहा है, क्या मैं उसकी हकदार नहीं हूँ?"

देखते ही देखते एंड्रिया का न्यूयॉर्क जाने का समय आ गया। सिया और एंड्रिया ने एक-दूसरे से 'गुडबाय' और 'गुडलक' कहकर विदा ली।

समय बीता। ना ही एंड्रिया के कोई समाचार आए और ना ही सिया ने एंड्रिया के टच में रहने की कोशिश की।

और एक दिन सिया की किस्मत चमकी। इंडिया के बेस्ट बेली डान्सिग स्कूल में उसे ऐड्मिशन मिल गया। थोड़े वर्षों की मेहनत के बाद मुख्य डान्सर के रूप में उसकी नियुक्ति हुई। उसके स्कूल को 'इन्टरनेशनल बेले डान्सिग फेस्टिवल'

में भाग लेने का मौका मिला। फेस्टिवल न्यूयॉर्क में होना था और सिया को विश्वास था कि उसे उसकी पुरानी फ्रेन्ड वहाँ जरूर मिलेगी।

इंडिया की सभी टीमें न्यूयॉर्क पहुँचीं। प्रेक्टिस सेशन्स शुरू हुए। पहले दिन से सिया एंड्रिया को ढूँढ रही थी। लेकिन वह कहीं दिखाई नहीं दी। सिया को लगा, "शायद उसके स्कूल ने भाग नहीं लिया होगा।"

परफॉर्मेन्स का दिन आ गया। सिया अपना सुंदर डान्स दुनिया को दिखाने के लिए तैयार थी। सिया के ग्रुप ने स्टेज पर धमाकेदार डान्स किया। एक के बाद एक सभी परफॉर्मेन्स पूरे हुए और रिज़ल्ट का समय आ गया। सिया को विश्वास था कि उसके ग्रुप को फर्स्ट प्राइज़ मिलेगा।

लेकिन जब विनर की घोषणा हुई तो सिया की सारी खुशी गायब हो गई। सिया के स्कूल को सेकन्ड प्राइज़ मिला था।

समीरा ने सिया को बधाई दी, "तुम्हारा डान्स बहुत सुन्दर था, सिया!"

"क्या फायदा! सिर्फ एक पॉइन्ट से हार गए। नहीं तो फर्स्ट आ जाते।" सिया का चेहरा उतर गया।

"सिया, कीमत तो इस बात की है कि तुमने अपना बेस्ट परफॉर्मेन्स दिया!!" समीरा ने सिया को प्रोत्साहित करने की कोशिश की।

तभी सिया की नज़र ऑडियन्स में बैठे हुए एक जाने-पहचाने चेहरे की तरफ पड़ी। "दी, वहाँ देखो एंड्रिया बैठी है..."

सिया दौड़कर एंड्रिया के पास गई।

"ओह एंड्रिया, मैं कितने दिनों से तुम्हें ढूँढ रही हूँ..." सिया एंड्रिया के बगल में जाकर बैठ गई।

"सिया!! तुम्हारा डान्स सुपर्ब था... " एंड्रिया ने सिया का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा।

"लेकिन तुम क्यों डान्स में..." सिया अपना वाक्य पूरा करती उससे पहले व्हाइट युनिफार्म पहने एक व्यक्ति ने आकर एंड्रिया से कहा, "एंड्रिया बेबी! कार आ गई है..."

"ओके, चलो..." कहकर एंड्रिया नीचे झुकी। सीट के नीचे से उसने क्रचेस (बैसाखियाँ) निकालीं।

यह देखकर सिया को शॉक लगा। तभी समीरा दी भी वहाँ आ गई। एंड्रिया को ऐसी हालत में देखकर उन्हें भी धक्का लगा।

"दो साल पहले की बात है। मैं बेले डान्स में बहुत अच्छा परफार्म कर रही थी। बस मुख्य डान्सर

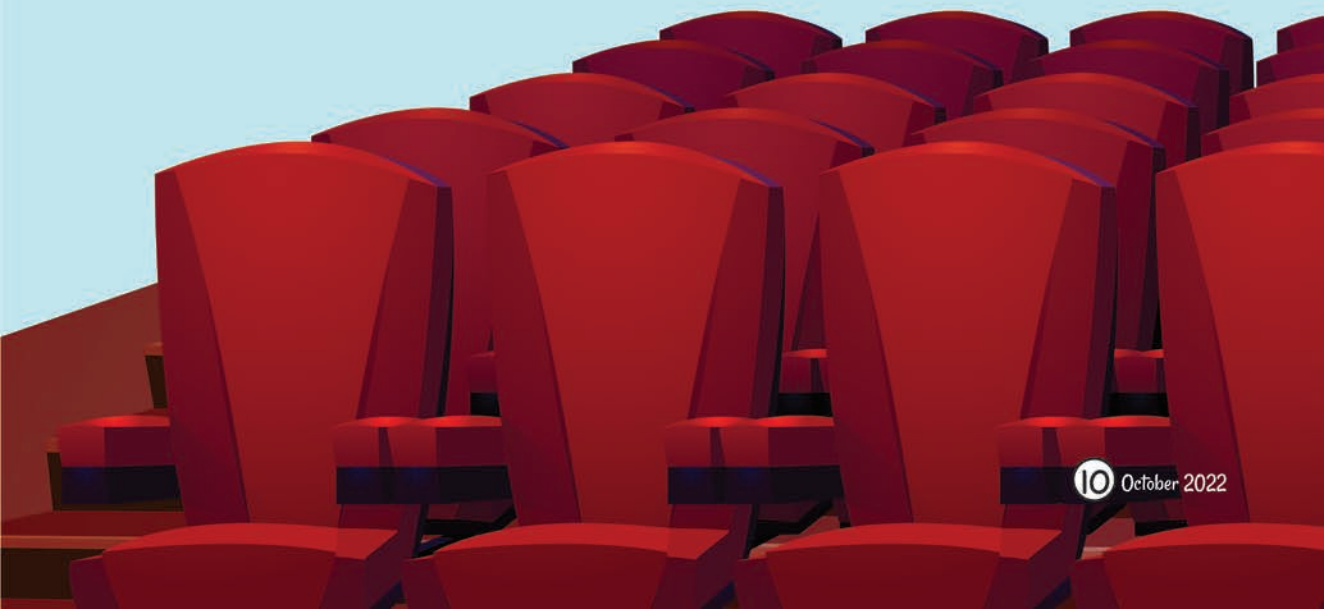

बनने ही वाली थी कि तभी मेरा ऐक्सिडेन्ट हो गया। दाहिना पैर इतनी बुरी तरह जख्मी हो गया था कि उसे काटना पड़ा।"

"ओह... सो सॉरी..." सिया के मुँह से निकला।

"दी, आपके द्वारा कहे हुए शब्द मेरे लिए आशीर्वाद स्वरूप बन गए", एंड्रिया ने अपने बैग में से एक डायरी निकाली। कवर पर लिखा था - थैंक यू लाइफ। "जब लाइफ का सबसे बड़ा ड्रीम टूट गया तब आपके द्वारा कहे गए शब्द याद आए। और जो मेरे पास नहीं रहा उसका दुःख मनाने के बदले जो मेरे पास था उसके लिए थैंकफुल रहना सीखती गई। मैं रोज एक 'थैंक यू' लिस्ट बनाने लगी। और रियली दी, लाइफ ईज़ी हो गई। ईज़ी ही नहीं हैपी हो गई।"

"थैंक यू लिस्ट! लेकिन थैंकफुल किसलिए? लाइफ ने तुम्हारा सबसे बड़ा ड्रीम तुम्हारे पास से छीन लिया", सिया बोल उठी।

"लाइफ अभी भी ब्युटिफुल है सिया। एक पैर नहीं है तो क्या हो गया, हाथ तो हैं ना! हाथों के मुवमेन्ट से मैंने 'हैन्ड शैडो-आर्ट' सीख लिया और आज मैं बहुत अच्छा परफार्म करती हूँ। पैर डान्स नहीं कर सकते तो क्या हुआ, हाथ तो कर सकते हैं ना!" एंड्रिया ने बहुत ही सरलता से कहा। समीरा दी ने एंड्रिया को गले लगा लिया, "सो प्राउड ऑफ यू, माइ डियर।"

सिया की आँखों मे आँसू आ गए। पंद्रह मिनिट पहले सिया इस बात से दुःखी थी कि उसकी स्कूल को सेकन्ड प्राइज़ मिला और जब नजरें नीचे करके उसने अपने पैरों की तरफ देखा तो मन ही मन 'थैंक यू, लाइफ' कहा।

लाइफ! एक्स्चेन्ज़ ऑफर

अवश्य ही सूज़ी सबसे ज्यादा सुखी होगी।
तभी सूज़ी आ गई।
देवी आर्निका, मुझे ऐल्फ्रेन्ड की तरह 'टेन्शन फ्री' लाइफ जीनी है।

कोई अपनी लाइफ में हैपी नहीं है। सभी ने एक्स्चेन्ज ऑफर माँगा है।

सुनो, सुनो एवरीबडी ... देवी आर्निका ने आज शाम हम सब को मैजिक ट्री के पास बुलाया है।

शाम को चारों एल्व्ज़ एक टेबल पर आकर बैठ गए।
तुम सभी के सामने एक पेपर रखा है। उसमें तुम्हारे प्रॉब्लम्स और विश लिखो।

सभी ने प्रॉब्लम्स और विश लिखकर अपने-अपने पेपर को टेबल पर रख दिया।
ओके... अब, जिसे अपनी लाइफ जिसके साथ एक्सचेन्ज करनी है उसका पेपर मुझे लाकर दो। मेरे मैजिक से तुम्हें उसके जैसी लाइफ मिल जाएगी।
सूज़ी ने ऐल्फ्रेड का पेपर उठाया।
अरे, मुझे तो ऐल्फ्रेड के जैसी लाइफ चाहिए लेकिन वह तो कितना दुःखी है। उसे तो और ज्यादा पैसे चाहिए।
क्या सूज़ी इतनी कमजोर है? हर चीज़ के लिए दूसरों पर डिपेन्डेन्ट है। मुझे उसके जैसी लाइफ चाहिए थी, पर अब नहीं।
ओह, जूलिया कितना अकेला महसूस करती है! मुझे उसके जैसा अकेलापन महसूस नहीं करना है।
मुझे तो पता ही नहीं था कि मैं ऑलरेडी एक हैपी लाइफ जी रहा हूँ। नहीं बाबा, अर्नी जैसी भागदौड़ मुझे नहीं चाहिए।
ओके, तो सभी ने पेपर चूज़ कर लिए? सभी मैजिक के लिए तैयार हो?
आर्निका देवी! मैजिक की जरूरत नहीं है।

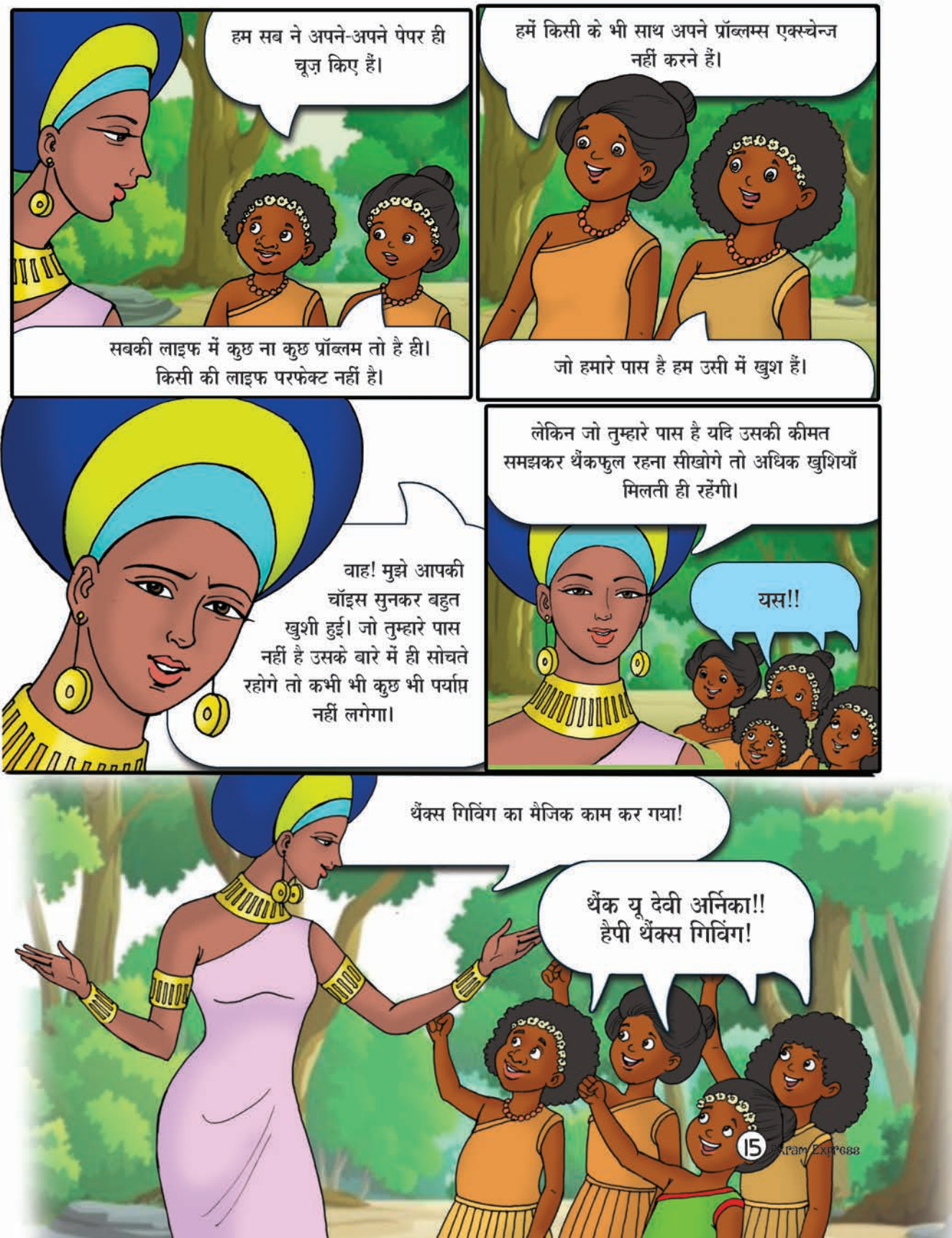
हम सब ने अपने-अपने पेपर ही चूज़ किए हैं।
सबकी लाइफ में कुछ ना कुछ प्रॉब्लम तो है ही। किसी की लाइफ परफेक्ट नहीं है।
हमें किसी के भी साथ अपने प्रॉब्लम्स एक्स्चेन्ज नहीं करने हैं।
जो हमारे पास है हम उसी में खुश हैं।
वाह! मुझे आपकी चॉइस सुनकर बहुत खुशी हुई। जो तुम्हारे पास नहीं है उसके बारे में ही सोचते रहोगे तो कभी भी कुछ भी पर्याप्त नहीं लगेगा।
लेकिन जो तुम्हारे पास है यदि उसकी कीमत समझकर थैंकफुल रहना सीखोगे तो अधिक खुशियाँ मिलती ही रहेंगी।
यस!!
थैंक्स गिविंग का मैजिक काम कर गया!
थैंक यू देवी अर्निका!! हैपी थैंक्स गिविंग!
15

रियल लाइफ स्टोरी

अंग्रेजी में 'डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' के नाम से विख्यात पुस्तक दुनिया की बेस्ट सेलर पुस्तक में से एक है। मूलरूप से डच भाषा की इस पुस्तक का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में किया गया है।

इस पुस्तक की लेखिका चौदह वर्ष की एक यहूदी लड़की है, जिसका नाम ऐनी फ्रैंक है। ऐनी फ्रैंक एक समृद्ध परिवार की लड़की थी। लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, जब हिटलर जर्मनी में नाज़ी पार्टी का लीडर था, तब हिटलरने सभी यहूदियों को मारने का आदेश दिया तब ऐनी फ्रैंक और उसके परिवार को एक छोटी सी जगह पर हिटलर की सेना से छिपकर रहना पड़ा।

आलीशान मकान में रहने की अभ्यस्त लड़की को जब इतनी छोटी जगह में मौत के भय से छिपकर रहना पड़ा तब क्या उसने कोई शिकायतों की लिस्ट बनाई? नहीं, लिस्ट तो बनाई, लेकिन शिकायतों की नहीं। ऐनी फ्रैंक को अपनी तेरहवीं वर्षगाँठ पर उपहार में एक डायरी मिली थी। दो वर्ष तक रोज उसने उस डायरी में अपने विचारों और अनुभवों का वर्णन किया। और वही डायरी उसकी मृत्यु के बाद, 'डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई।

ऐनी की डायरी से हमें ऐनी के गज़ब के पॉज़िटिव रुख की झाँकी मिलती है। ऐनी का रूम बहुत सँकरा था। लेकिन रूम को ब्राइट करने के लिए उसने दीवारों पर सुंदर चित्र चिपका दिए। वह छोटी सी बच्ची, जो हर दिन मृत्यु और विनाश के न्यूज़ सुनती थी, वह अपने जीवन के लिए आभारी थी। उसने अपनी डायरी में लिखा है,

"अन्य यहूदियों की तुलना में हम स्वर्ग में हैं। दूसरों को तो छिपने का भी चान्स नहीं मिला।"

"मैं दुःख और पीड़ा के बारे में नहीं सोचती। सिर्फ जो सुंदरता बची हुई है उसे देखती हूँ।"

"रोज रात को सोने से पहले मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि, थैंक यू गॉड, उन सबके लिए, जो सुंदर हैं, अच्छे हैं और प्रिय हैं।"

"इतना सब कुछ (बुरा) होने के बावजूद मेरा ऐसा मानना है कि लोग दिल के बहुत अच्छे होते हैं।"

"दुःख और पीड़ा के बारे में सोचने के बजाय, बाहर जाओ, सनशाइन एन्जॉय करो, प्रकृति की सुंदरता की सराहना करो।"

"जब बहुत बड़ी मुसीबत आ पड़े तो उसमें से भी कुछ अच्छा ढूँढ़ने का प्रयत्न करना। यदि वह खोजने में आप सफल होंगे तो न केवल आपकी खुशी बढ़ेगी बल्कि आप अपने आसपास के लोगों को भी सुखी कर सकोगे।"

मित्रों, जब लॉकडाउन के समय हमें घर में बैठे रहना पड़ा था तब हमने मन में बहुत सारी शिकायतें की होंगी। इस युवती को तो एक-दो महीने नहीं बल्कि दो साल तक अपने परिवार के साथ एक संकरी जगह पर छिपकर रहना पड़ा था। इतनी कठिन परिस्थिति में भी उसने छोटी-छोटी बातों में खुशी ढूँढ़ ली और उसे अपनी डायरी में बयान किया। आज वही डायरी लाखों लोगों के लिए प्रेरणादायक बन गई है। तो चलो, हम भी ऐनी फ्रैंक की तरह प्रॉब्लम्स में भी खुशियाँ ढूँढ़कर जीवन जीने का प्रयास करें।

Thank-You Jar

एक थैंक यू जार बनाते हैं। जिस तरह हम पिगी-बैंक में पैसे जमा करते हैं, उसी तरह थैंक-यू जार में हम 'थैंक यू नोट्स' जमा करेंगे।

उन 'थैंक यू नोट्स में हम हर हफ्ते या हर महीने ऐसी बातें याद करके लिखेंगे जिसके लिए हम थैंकफुल हैं! तो चलो, इतने कीमती 'थैंक यू नोट्स' जमा करके धनवान बनें।

आपके बनाए हुए थैंक यू जार के फोटोस् हमें वोट्सऐप नंबर 9313665562 पर शेयर करो। फोटोस भेजने की Last date 15th November 2022.

चलो खेलते हैं...

नीचे दिए गए चित्र में ज़िमी को किन-किन चीज़ों के लिए थैंकफुल होना चाहिए उनपर सर्कल करें।

Akram Express
October 2022
Year : 10, Issue :7
Conti. Issue No.: 115

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

और अंत में...

एक दिन मुल्ला नसरूद्दीन ने एक अत्यंत दु:खी व्यक्ति को देखा। मुल्ला ने जब उससे दु:ख का कारण पूछा, तब उस व्यक्ति ने कहा, "मेरे पास खुश होने का कोई कारण नहीं है। मैं इस बैग में जीवन भर की कमाई लेकर आया हूँ। लेकिन कहीं खुशी नहीं मिल रही है।"

जब उस व्यक्ति का ध्यान कहीं और था तब मुल्ला वह बैग लेकर भाग गए। अपना बैग अपने पास नहीं पाकर वह व्यक्ति बहुत घबरा गया। वह घबराया हुआ बैग की तलाश करने लगा। मुल्ला एक पेड़ के पीछे छिपकर उस व्यक्ति की हालत देख रहे थे। उन्होंने धीरे से बैग व्यक्ति के पास लाकर रख दिया। बैग वापस पाकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

मुल्ला ने सोचा, "जिस बैग की थोड़ी देर पहले तक कोई कीमत नहीं थी, उसी बैग को वापस पाकर इतनी खुशी? क्या खुश होने के लिए कुछ खोना जरूरी है?"

मित्रों, किसी भी चीज़ की कीमत तभी समझ में आती है जब वह हमारे पास से चली जाती है। चलो, आज हमारे पास जो कुछ भी है उसे खोने से पहले उसकी कीमत समझें और खुश रहें।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025